अध्यात्म ज्ञान एवं चिन्तन संस्था
(SOCIETY FOR ADHYATMA STUDIES)

17, सिविल लाइन्स, कमिश्नर ऑफिस के सामने, मुरादाबाद – 244001
मो0 9412241221

ब्रह्म ज्ञान विचार गोष्ठी – 69

15.12.2013

"श्रीमद् भगवद् गीता"
द्वादश अध्याय
"भक्ति योग"

निवेदक

डॉ0 यू0 के0 ाह
ाह नर्सिंग होम,
सिविल लाइन्स, मुरादाबाद
फोन नं0 9359716440

रविन्द्र नाथ कत्याल
अमर बसेरा,
सिविल लाइन्स, मुरादाबाद
फोन नं0 9837041945

सुधीर गुप्ता, एडवोकेट
17, सिविल लाइन्स,
मुरादाबाद
फोन नं0 9412241221

श्रीमद् भगवद् गीता

अध्याय – 12

"भक्ति योग"

अर्जुन उवाच–

एवं सततयुक्ता ये भक्तास्त्वां पर्युपासते।
ये चापि अक्षरम् अव्यक्तं तेषां के योगवित्तमाः।। 1।।

अर्जुन ने कहा–
हे कृष्ण! जो भक्तजन निरन्तर आपके ध्यान में लगे हुये आपकी श्रेष्ठ भाव से उपासना करते हैं और जो अविनाशी निराकार की उपासना करते हैं उन दोनो प्रकार के भक्तों में उत्तम योगवेत्ता कौन है ?

श्रीभगवान उवाच–

मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते।
श्रद्धया परया उपेतास्ते मे युक्ततमा मताः।। 2।।

श्रीभगवान ने कहा–
हे अर्जुन! मुझमें मन को एकाग्र करके निरन्तर मेरे ध्यान में लगे हुये जो भक्तजन परम श्रद्धा से युक्त होकर मेरी उपासना करते हैं वे मेरे मत से अति उत्तम हैं अर्थात योगियों से भी अति उत्तम हैं।

ये तु अक्षरम् अनिर्देश्यम् अव्यक्तं पर्युपासते।
सर्वत्रगम् अचिन्त्यं च कूटस्थम् अचलं ध्रुवम्।। 3।।

जो अविनाशी, अकथनीय, निराकार, सर्वव्यापी, मन–बुद्धि से परे, सदा एकरस रहने वाले, नित्य सम्भव ब्रह्म की उपासना करते हैं वे मुझे प्राप्त करते हैं।

संनियम्ये इन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः।
ते प्राप्नुवन्ति माम्एव सर्वभूतहिते रताः।। 4।।

और जो समस्त इन्द्रियों को अच्छी प्रकार वश में करके समरस बुद्धि वाले सम्पूर्ण प्राणियों के हित में लगे हुये योगी हैं वे भी मुझे ही प्राप्त करते हैं।

क्लेशः अधिकतरः तेषाम् अव्यक्त आसक्त चेतसाम्।
अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं देहवद्भिः अवाप्यते।। 5।।

निराकार ब्रह्म में चित्त लगाने वाले व्यक्तियों को अधिक परिश्रम करना पड़ता है क्योंकि देह के प्रति जागरुक व्यक्तियों की शुद्ध निराकार ब्रह्म में स्थिति होनी कठिन होती है।

ये तु सर्वाणि कर्माणिमयि संन्यस्य मत्पराः।
अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते।। 6।।

मुझमें ध्यान लगाने वाले ये भक्तजन सम्पूर्ण कर्मों को मुझे अर्पण करके तैलधारावत अनन्य योग से ध्यान लगाकर निरन्तर मेरी उपासना करते हैं।

तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात्।
भवामि नचिरात् पार्थ मयि आवेशित चेतसाम्।। 7।।

हे अर्जुन! मुझमें चित्त को सम्पूर्ण रुप से लगाने वाले भक्तों का मैं शीघ्र ही मृत्यु रुपी संसार सागर से उद्धार कर देता हूं।

मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय।
निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः।। 8।।

हे अर्जुन! तुम मुझमें मन को लगाओ और मुझमें ही बुद्धि को लगाओ, इसके उपरान्त तुम मुझमें ही निवास करोगे अर्थात मुझको ही प्राप्त होगे, इसमें कुछ भी संशय नही है।

अथ चित्तं समाधातुं न शक्नोषि मयि स्थिरम्।
अभ्यासयोगेन ततो माम् इच्छाप्तुं धनंजय।। 9।।

यदि तुम मन को मुझमें स्थिर रुप से स्थापित करने में समर्थ नही हो तो हे अर्जुन! अभ्यास योग के द्वारा मुझको प्राप्त करने की इच्छा करो (अभ्यास योग में ईश्वर का मनन, श्वास के द्वारा जप आदि क्रियायें सम्मिलित हैं)।

अभ्यासे अपि असमर्थोऽसि मत्कर्मपरमो भव।
मदर्थम् अपि कर्माणि कुर्वन्सिद्धिम् अवाप्स्यसि।। 10।।

हे अर्जुन! यदि तुम अभ्यास योग करने में भी असमर्थ हो तब केवल मेरे लिये ही कर्म करो। इस प्रकार मेरे लिये कर्मो को करते हुये भी तुम मुझे प्राप्त होओगे।

अथैतत् अपि अशक्तोऽसि कर्तुं मद् योगम् आश्रितः।
सर्वकर्मफलत्यागं ततः कुरु यतात्मवान्।। 11।।

यदि तुम मेरे लिये कर्मो को करने में भी असमर्थ हो तब आत्मवान व्यक्ति की तरह मन को वश में करके सभी कर्मो के फलों को त्याग कर कर्म करो।

श्रेयो हि ज्ञानम् अभ्यासात् ज्ञानात् ध्यानं विशिष्यते।
ध्यानात् कर्मफलत्यागः त्यागात् शान्तिः अनन्तरम्।। 12।।

अभ्यास से ज्ञान श्रेष्ठ है, ज्ञान से ध्यान श्रेष्ठ है तथा ध्यान से कर्मफलत्याग श्रेष्ठ है, त्याग से तत्काल शान्ति प्राप्त होती है।

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च।
निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी।। 13।।

इस प्रकार शान्ति को प्राप्त हुआ व्यक्ति जो सब प्राणियों के प्रति द्वेष भाव से रहित है, जो सब प्राणियों से स्वार्थरहित प्रेम करने वाला है और जो करुणा से पूर्ण है, जो मोह से रहित है और अहंकार से रहित है, जो सुख और दुख में एक समान है और क्षमा करने वाला है ऐसा मेरा भक्त मुझे प्रिय है।

संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः।
मयि अर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः।। 14।।

जो निरन्तर सन्तुष्ट है, ध्यान योग में युक्त है, मन और इन्द्रियों सहित शरीर को वश में किये हुये है, दृढ़ निश्चय वाला है और जिसने अपने मन व बुद्धि को मुझे अर्पित कर दिया है ऐसा मेरा भक्त मुझे प्रिय है।

यस्मात् न उद्विजते लोकः लोकात् न उद्विजते च यः।
हर्ष अमर्ष भय उद्वेगैः मुक्तः यः स च मे प्रियः।। 15।।

जो किसी भी जीव को उद्वेलित नही करता है और जो स्वयं भी किसी जीव से उद्वेलित नही होता है तथा जो हर्ष और अमर्ष, भय और उद्वेग आदि से रहित है वह भक्त मेरे को प्रिय है (अमर्ष का अर्थ दूसरे की उन्नति को देखकर सन्ताप होना है)।

अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः।
सर्वारम्भ परित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः।। 16।।

जो व्यक्ति अपेक्षाओं से रहित है, जो बाहर व भीतर से शुद्ध है, जो बुद्धिमान और विचारशील है, जो राग–द्वेष और अच्छे–बुरे के द्वन्द्वों से परे है, जो बुद्धि–विवेक को प्रयोग करके व्यथा से पार हो गया है, जिसने कामना से प्रेरित कर्मो को त्याग कर दिया है ऐसा मेरा भक्त मुझको प्रिय है।

यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न कांक्षति।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः।। 17।।

जो व्यक्ति न हर्षित होता है, न द्वेष करता है, न शोक करता है, न आकांक्षा करता है और जो शुभ व अशुभ सम्पूर्ण कर्मों के फल का त्यागी है वह भक्ति युक्त व्यक्ति मुझे प्रिय है।

समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः संगविवर्जितः।। 18।।

जो व्यक्ति शत्रु और मित्र में सम भाव रखता है, जो मान और अपमान में, सर्दी और गर्मी में, सुख और दुख आदि द्वन्द्वों में सम भाव रखता है और जो आसक्ति से रहित है।

तुल्यनिन्दास्तुतिः मौनी संतुष्टो येन केनचित्।
अनिकेतः स्थिरमतिः भक्तिमान्मे प्रियो नरः।। 19।।

जिसके लिये निन्दा और स्तुति दोनो ही एक समान हैं, जो मौनी (मननशील) है, जो किसी भी परिस्थिति में सन्तुष्ट है, जो रहने के स्थान में आसक्त नहीं है, जो स्थिर बुद्धि वाला है ऐसा भक्तिवान व्यक्ति मुझको प्रिय है।

ये तु धर्म्य अमृतम् इदं यथोक्तं पर्युपासते।
श्रद्धाना मत्परमा भक्ताः ते अतीव मे प्रियाः।। 20।।

और जो पूर्व में कहे गये इस धर्मरुपी अमृत की उपासना करते हैं ऐसे श्रद्धावान और मुझमें समर्पित भक्त मुझको अत्यन्त प्रिय हैं।

(अर्थात इस अध्याय में ईश्वर–भक्ति के जो मार्ग बताये गये हैं उनका अनुसरण जो व्यक्ति करता है वह ईश्वर को अत्यन्त प्रिय होता है।)

।। इति द्वादशोऽध्यायः।।